International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

जयशंकर प्रसाद के साहित्य में दर्शन, सौंदर्य, सत्य और जीवन दृष्टि का समन्वय

डॉ. वंदना

असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी, राजकीय महिला महाविद्यालय, बदायूं

भारतीय साहित्य के आधुनिक काल, विशेष रूप से छायावाद के स्वर्ण युग में जयशंकर प्रसाद का स्थान एक ऐसे मनीषी रचनाकार का है, जिन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से न केवल काव्य की भाषा और संवेदना को बदला बल्कि एक संपूर्ण जीवन-दर्शन की प्रतिष्ठा की। प्रसाद का साहित्य केवल कलात्मक विलास नहीं है अपितु वह भारतीय मेधा के हजारों वर्षों के संचित ज्ञान उपनिषदों की दार्शनिक गहराई शैवागमों के आनंदवाद और आधुनिक युग की बेचैनी के मध्य एक सेतु का निर्माण करता है। उनके कृतित्व में दर्शन की गंभीरता, सौंदर्य की सूक्ष्मता, सत्य की शोधक दृष्टि और जीवन के प्रति एक समन्वयात्मक दृष्टिकोण का ऐसा अद्भुत मेल मिलता है जो उन्हें विश्व साहित्य के अग्रणी चिंतकों की श्रेणी में खड़ा करता है। प्रसाद का व्यक्तित्व उनकी सर्जनात्मक शक्ति और दार्शनिक दृष्टि के विकास के साथ क्रमशः विकसित होता गया जिसमें उन्होंने वेदों, उपनिषदों और बौद्ध दर्शन के विचारों को आत्मसात किया । उन्हें छायावाद का 'ब्रह्मा' माना है क्योंकि उन्होंने हिंदी साहित्य में एक नई सृष्टि का सृजन किया जहाँ आत्मा की सूक्ष्म अनुभूतियों को प्रकृति और इतिहास के साथ एकाकार कर दिया गया।

जयशंकर प्रसाद का व्यक्तित्व और उनकी जीवन यात्रा उनके साहित्य की आधारभूमि तैयार करने में अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। उनका जन्म ३० जनवरी १८८९ को वाराणसी के एक प्रतिष्ठित 'सुंघनी साहु' परिवार में हुआ था जहाँ शिव-भक्ति की लंबी परंपरा थी। वाराणसी जो स्वयं भारतीय संस्कृति और दर्शन का केंद्र रही है ने प्रसाद के आरंभिक संस्कारों को गढ़ा। उनके जीवन की खुशहाल अवधि अधिक समय तक नहीं रही जब वे मात्र १२ वर्ष के थे उनके पिता देवी प्रसाद जी का निधन हो गया और उसके बाद पारिवारिक विपदाओं तथा अल्पायु में ही माता-पिता तथा बड़े भाई के निधन ने उन्हें जीवन के कठोर सत्य और वेदना से साक्षात्कार कराया । इसी व्यक्तिगत दुःख और संघर्ष ने उनके साहित्य में वह करुणा और गंभीरता भरी जो आगे चलकर 'आँसू' और 'कामायनी' जैसी कालजयी रचनाओं का आधार बनी। उनकी औपचारिक शिक्षा भले ही केवल आठवीं कक्षा तक हुयी लेकिन उनका 'स्वाध्याय' अत्यंत व्यापक था जिसके माध्यम से उन्होंने संस्कृत, पालि, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं के साथ-साथ वैदिक वांग्मय और भारतीय दर्शन का अगाध ज्ञान अर्जित किया। उनका व्यक्तित्व सौम्य, शांत और गंभीर था वे परनिंदा तथा आत्मस्तुति से सदैव दूर रहते थे।

प्रसाद के साहित्य की दार्शनिक आधारशिला मुख्य रूप से कश्मीरी शैव दर्शन जिसे 'प्रत्यभिज्ञा दर्शन' कहा जाता है पर टिकी हुई है। प्रत्यभिज्ञा का अर्थ है 'पुनः पहचानना'—अर्थात जीव अपनी अज्ञानता के कारण स्वयं के शिव-स्वरूप को भूल गया है और उसे पुनः पहचानना ही मुक्ति है । प्रसाद ने इस दार्शनिक पृष्ठभूमि को अपने साहित्य, विशेषकर 'कामायनी' में बड़ी कुशलता से पिरोया है। वे अद्वैतवादी थे लेकिन उनका अद्वैतवाद शंकराचार्य के 'मायावाद' से भिन्न था क्योंकि वे जगत को मिथ्या नहीं मानते थे। जहाँ वेदांत दर्शन में संसार के मिथ्यात्व का प्रतिपादन हुआ है वहीं प्रसाद ने शिव दर्शन की मान्यताओं को अपनाते हुए संसार की सत्यता को स्वीकारा है। उनके अनुसार, शिव (कल्याण) ही एकमात्र तत्व है जो जड़-जगत के कण-कण में विद्यमान है और यह संसार शिव की 'लीला' तथा उनकी शक्ति का ही प्रसार है । उनकी कविता की यही जड़ का चेतन आनंद' जैसी पंक्तियाँ इसी सक्रिय और आनंदवादी जीवन-दर्शन को

रेखांकित करती हैं । प्रसाद का दर्शन जड़ और चेतन के द्वैत को अस्वीकार करता है और प्रकृति को माया कहकर यथार्थ जीवन से पलायन करने की अनुमति नहीं देता ।

समरस थे जड़ या चेतन,
सुंदर साकार बना था।
चेतनता एक विलसती,
आनंद अखंड घना था।

सौंदर्य की अवधारणा प्रसाद के साहित्य में एक नवीन और सूक्ष्म परिभाषा प्राप्त करती है। उन्हें 'प्रेम और सौंदर्य' का कवि कहा जाता है लेकिन उनके यहाँ सौंदर्य की व्याख्या मांसल या स्थूल चित्रण तक सीमित नहीं है। उन्होंने सौंदर्य को एक 'अमूर्त' और 'आंतरिक' तत्व के रूप में प्रतिष्ठित किया। प्रसाद का मानना था कि सौंदर्य-बोध बिना रूप के हो ही नहीं सकता लेकिन यह रूप केवल भौतिक नेत्रों का विषय नहीं है हृदय की अनुकृति और आत्मा की दीप्ति है । प्रसाद के अनुसार वास्तविक सौंदर्य का दर्शन अनिवार्यतः आनंद भावना का संचार करता है और यह आनंद सामान्य उपयोगिता से भिन्न होता है। 'कामायनी' में श्रद्धा का जो रूप वर्णन मिलता है वह सौंदर्य की पराकाष्ठा है जहाँ शरीर के माध्यम से आत्मा की आभा झलकती है।

नील परिधान बीच सुकुमार, *
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग,
खिला हो ज्यो बिजली का फूल
मेघ वन बीच गुलाबी रंग।

जैसी पंक्तियाँ सौंदर्य की उस सूक्ष्मता को दर्शाती हैं जहाँ कांति भीतर से बाहर की ओर प्रवाहित होती है । उनके काव्य में प्रकृति भी केवल एक जड़ वस्तु नहीं है वह मानवीय भावनाओं के साथ स्पंदित होती है और उस परम सत्ता के अप्रतिम काव्य के रूप में प्रस्तुत होती है।

सत्य के संधान की दृष्टि से प्रसाद एक ऐसे साहित्यकार हैं जिनकी दृष्टि निरंतर भारत के स्वर्णिम अतीत की ओर लगी रहती थी लेकिन उनका उद्देश्य वर्तमान से पलायन करना नहीं था। उनकी ऐतिहासिक चेतना 'मूल्यान्वेषिणी' है; वे इतिहास के माध्यम से उन शाश्वत सत्यों की खोज करते हैं जो आज के युग की समस्याओं का समाधान दे सकें । प्रसाद का मानना था कि अतीत से एकदम विच्छिन्न और कटा हुआ वर्तमान जैसा कुछ नहीं होता, इसलिए वे इतिहास को वर्तमान के पुनरीक्षण और पुनर्निर्माण का साधन मानते थे । उनके नाटकों में सत्य की खोज का अर्थ मानवीय मूल्यों की खोज है। जब वे कहते हैं कि अखिल विश्व एक संपूर्ण सत्य है असत्य का भ्रम दूर करना होगा तब वे संकीर्णताओं से ऊपर उठकर एक वैश्विक मानवतावादी सत्य की बात कर रहे होते हैं । उनके लिए सत्य केवल गणितीय आंकड़ों तक सीमित नहीं है सत्य विराट है और साहित्य समय की वास्तविक स्थिति दिखाते हुए उसमें आदर्शवाद का सामंजस्य स्थापित करता है। वे मानते थे कि साहित्यकार को यथार्थ से ऊपर उठकर सत्य तक पहुँचना ही चाहिए क्योंकि यथार्थ केवल 'कैसा है' बताता है, जबकि साहित्य 'कैसा होना चाहिए' का संकेत देता है।

चेतन समुद्र में जीवन
लहरों सा बिखर पड़ा है
कुछ छाप व्यक्तिगत अपना
निर्मित आकार बड़ा है।

प्रसाद की जीवन दृष्टि 'समरसता' और 'समन्वय' के विराट पथ पर आधारित है। उन्होंने अपने युग की जड़ता और निराशा के विरुद्ध 'आनंद' और 'सक्रियता' का मार्ग प्रशस्त किया। उनकी जीवन दृष्टि का मूल मंत्र 'समरसता' है,

जिसका अर्थ है—जीवन के विविध पक्षों, जैसे सुख-दुःख, जड़-चेतन, इच्छा,ज्ञान,क्रिया और पुरुष-नारी के बीच संतुलन स्थापित करना। प्रसाद ने देखा कि आधुनिक मनुष्य की सबसे बड़ी त्रासदी उसका 'शुष्क बुद्धिवाद' और 'हृदय' से उसका विच्छेद है। कामायनी में वे स्पष्ट करते हैं कि जब तक मनुष्य की इच्छा, ज्ञान और क्रिया में सामंजस्य नहीं होगा तब तक वह अशांति का अनुभव करता रहेगा। उनकी जीवन दृष्टि में नारी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है वह उनके लिए केवल भोग की वस्तु नही है 'श्रद्धा' और 'शक्ति' का प्रतीक है जो पुरुष को उसके अहंकार से मुक्त कर मानवता के कल्याण की ओर ले जाती है। प्रसाद की कल्याणकारी दृष्टि व्यक्ति से समाज और समाज से राष्ट्र की ओर बढ़ती है। उनका मानना हू कि जीवन का लक्ष्य समरसता के द्वारा अखंड आनंद की प्राप्ति है।

प्रसाद के समस्त चिंतन और सृजन का शिखर महाकाव्य 'कामायनी' दर्शन, सौंदर्य और सत्य का महासंगम है। यह रचना मानव चेतना के विकास का एक दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक दस्तावेज है, जहाँ मनु 'मन' का, श्रद्धा 'हृदय' की और इड़ा 'बुद्धि' की प्रतीक है। प्रलय के पश्चात अवसाद में डूबे मनु को श्रद्धा आशा और कर्म की ओर प्रेरित करती है लेकिन मनु जब श्रद्धा को छोड़कर इड़ा के पास जाते हैं तो वे विनाश और संघर्ष को निमंत्रण देते हैं। अंततः श्रद्धा ही उन्हें उस आनंद शिखर तक पहुँचाती है जहाँ जड़ और चेतन का भेद मिट जाता है और एक अखंड चेतना का विस्तार होता है। कामायनी में प्रसाद ने प्रत्यभिज्ञा दर्शन की सबसे सुंदर अभिव्यक्ति की है जहाँ वे 'चिति' को समस्त सृष्टि का मूल मानते हैं। यहाँ सत्य यह है कि दुःख और सुख एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और उनका समन्वय ही जीवन का वास्तविक विकास है। प्रसाद का आनंदवाद पलायनवादी नहीं है वह समस्याओं से जूझते हुए जीवन और जगत में प्रवृत्त होने का साहस प्रदान करता है।

नाट्य साहित्य के क्षेत्र में प्रसाद ने अतीत के गौरव से वर्तमान का पथ-प्रदर्शन किया है। उन्होंने हिंदी नाटक को एक स्वतंत्र साहित्यिक विधा के रूप में प्रतिष्ठित किया और उसे व्यावसायिक पारसी रंगमंच की गिरावट से बचाया। उनके ऐतिहासिक नाटक जैसे 'चंद्रगुप्त', 'स्कंदगुप्त' और 'अजातशत्रु' केवल पुरानी कथाएं नहीं हैं वे राष्ट्रीय जागरण के मंत्र हैं। 'स्कंदगुप्त' में वे दिखाते हैं कि किस प्रकार व्यक्तिगत प्रेम और महत्वाकांक्षा को राष्ट्र-धर्म की वेदी पर न्यौछावर किया जाना चाहिए। प्रसाद के नाटकों की एक बड़ी विशेषता उनके सशक्त नारी पात्र हैं। 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में उन्होंने नारी की स्वतंत्रता, उसके आत्म-सम्मान और अनैतिक विवाह प्रथाओं के विरुद्ध एक क्रांतिकारी स्वर उठाया है। उनके नाटकों के गीत जैसे "अरुण यह मधुमय देश हमारा" और "हिमाद्रि तुंग श्रृंग से", भारतीय संस्कृति के गौरव और स्वाधीनता के प्रति उल्लास जगाते हैं। प्रसाद के लिए नाटक जीवन का सपाट शीशा नहीं था अपितु वह रंजित किरणों को सघन बनाकर सत्य का साक्षात्कार कराने वाला माध्यम था।

गद्य साहित्य और विशेष रूप से कहानियों में प्रसाद ने अपनी सूक्ष्म सौंदर्य दृष्टि और मानवतावादी जीवन दर्शन का सफल प्रयोग किया है। उनकी कहानियों के पाँच संग्रह—छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आंधी और इंद्रजाल—हिंदी कहानी के विकास में मील का पत्थर हैं। 'आकाशदीप' में चम्पा और बुद्धगुप्त के माध्यम से वे प्रेम और कर्तव्य के अंतर्द्वंद्व को चित्रित करते हैं, जहाँ अंततः प्रेम का उदात्त रूप सेवा और त्याग में परिवर्तित हो जाता है। उनकी कहानियों में वातावरण का निर्माण और पात्रों की मनोवैज्ञानिक गहराई उन्हें अद्वितीय बनाती है। प्रसाद ने अपनी कहानियों में हाशिए के समाज जैसे बनजारे, विसाती, दासियाँ और भिखारियों की जीवनानुभूति को भी स्थान दिया। वे कहानी का मुख्य उद्देश्य सौंदर्य की एक झलक दिखाना और रस सृष्टि करना मानते थे। 'पुरस्कार' और 'ममता' जैसी कहानियों में वे राष्ट्र-प्रेम और सांस्कृतिक निष्ठा को व्यक्तिगत सुखों से ऊपर प्रतिष्ठित करते हैं।

उपन्यासों के क्षेत्र में प्रसाद ने 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' (अपूर्ण) के माध्यम से सामाजिक यथार्थ और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रयास किया। 'कंकाल' में वे समाज की गंदगी और धार्मिक पाखंडों को उजागर करते हैं, जबकि 'तितली' में वे ग्रामीण जीवन के पुनर्निर्माण और मानवीय मूल्यों की स्थापना का संदेश देते हैं। उनके उपन्यासों का मूल उद्देश्य मानवीय लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना करना है क्योंकि वे मानते थे कि आज ये मूल्य खतरे में हैं। प्रसाद का यथार्थवाद निराशावादी नहीं था उसमें वेदना थी जो करुणा की सहयोगिनी बनकर समाज को सात्त्विकता की ओर ले जाती थी। उनके उपन्यास भारत के नवनिर्माण का प्रयत्न करते हैं और मानव के लिए कर्मठता तथा साहस का संदेश

देते हैं । प्रसाद की दृष्टि में उपन्यास केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि जीवन सत्य को उद्घाटित करने का सशक्त माध्यम थे।
प्रसाद के साहित्य में सौंदर्यबोध केवल नारी या प्रकृति तक सीमित नहीं है वह मानवीय संवेदनाओं के सूक्ष्म स्तरों तक फैला हुआ है। वे प्रकृति के मानवीकरण को केवल एक काव्य-प्रवृत्ति नहीं

एक जीवन दर्शन के रूप में विकसित करते हैं। उनकी सौंदर्य चेतना में प्रेम और काम का भी समावेश है वे काम को महिमामंडित करते हुए उसे सृष्टि की सृजनात्मक शक्ति के रूप में देखते हैं। प्रसाद ने सौंदर्य को मांसल अभिव्यक्ति से ऊपर उठाकर उसे आत्मा तक पहुँचाने का कार्य किया जहाँ देह की सत्ता गौण हो जाती है और 'अहं' का विलय हो जाता है । उनके काव्य में सौंदर्य की तरलता बिजली के फूल की तरह भीतर से बाहर की ओर प्रस्फुटित होती है । यह सौंदर्य चेतना ही कवि प्रसाद को वैश्विक बनाती है जहाँ उनकी व्यक्तिगत अनुभूतियाँ सार्वभौमिक होकर समस्त मानवता को अपने भीतर समाहित कर लेती हैं ।

प्रसाद के साहित्य की भाषा और शिल्प भी उनके दार्शनिक और सौंदर्यवादी दृष्टिकोण का प्रतिबिंब हैं। उनकी भाषा अत्यंत शुद्ध, सजीव, लयात्मक और ओजपूर्ण है, जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग भावों को गरिमा प्रदान करता है। उन्होंने मात्रिक और वर्णिक दोनों छंदों का सफल प्रयोग किया है जिससे उनके काव्य में प्रवाह और मधुरता बनी रहती है । प्रसाद की काव्य शैली में परंपरागत और नवीन अभिव्यक्ति कौशल का सुंदर समन्वय मिलता है । उन्होंने अपनी रचनाओं में अद्भुत चित्रात्मकता का गुण पैदा किया, जहाँ शब्दों के माध्यम से ऐसी तस्वीरें उकेरी जाती हैं कि पाठक स्वयं को उस वातावरण का हिस्सा महसूस करने लगता है । उनके संवाद सरल, प्रभावशाली और उच्च भावनाओं से ओतप्रोत हैं और उनमें प्रतीकों तथा रूपकों का ऐसा कुशलतापूर्वक प्रयोग किया गया है जो गहरे दार्शनिक अर्थों को सरलता से संप्रेषित करते हैं।

आज के आधुनिक उपभोक्तावादी विश्व में प्रसाद के दर्शन की प्रासंगिकता और भी बढ़ गयी है। वर्तमान युग जहाँ संसाधनों के अनियंत्रित दोहन, युद्ध और भौतिकवादी सुखवाद के कारण संकटग्रस्त है वहाँ प्रसाद का 'समरसता' का सिद्धांत एक संजीवनी की तरह है । प्रसाद ने 'कामायनी' के माध्यम से चेतावनी दी थी कि केवल भौतिक वैभव मनुष्य को खोखला करता है इसलिए भौतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के बीच सामंजस्य अनिवार्य है । आज जब मनुष्य स्वयं एक वस्तु में बदल गया है और उसकी मानवीयता का क्षय हो रहा है तब कामायनी का संदेश कि "सुख-दुःख को दृश्य बनाकर" विश्व-नीड़ का निर्माण करना चाहिए, अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है । उनका आनंदवाद उपभोक्तावाद के विपरीत एक ऐसा मार्ग है जहाँ व्यक्तिगत सुख सबके कल्याण में समाहित हो जाता है। प्रसाद का स्वप्न एक ऐसे भारत का था जहाँ हृदय (श्रद्धा) और बुद्धि (इड़ा) का समन्वय हो और आज का विश्व इसी संतुलन के अभाव में अशांति और द्वेष झेल रहा है ।

प्रसाद की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक कहानियाँ भी भारतीय संस्कृति के गौरवगान का माध्यम बनी रहीं। उन्होंने 'ग्राम', 'रसिया बालम' और 'आकाशदीप' जैसी कहानियों के माध्यम से भारतीय चेतना में सांस्कृतिक मूल्यों को पुनः जागृत किया। वे विशुद्ध इतिहास नहीं लिख रहे थे बल्कि ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर समाज को भावी विनाश से बचाने का प्रयास कर रहे थे । सांस्कृतिक अवमूल्यन से व्यथित होकर उन्होंने अतीत के उन उज्ज्वल पृष्ठों को चुना जो वर्तमान की निराशा को दूर कर सकें । उनकी कहानियों में वीरता केवल युद्धों में नहीं अपने सिद्धांतों पर अडिग रहने और निर्बलों की सहायता करने में निहित है। प्रसाद ने दिखाया कि वीरता जिसका धर्म है वह कायरों या गिरे हुए प्रतिद्वंद्वी पर शस्त्र नहीं उठाता। यह उच्चाशय और उदारता ही प्रसाद के साहित्य का मूल स्वर है।

प्रसाद के साहित्य में 'दुःखवाद' और 'आनंदवाद' का द्वंद्व भी बड़ी गहराई से चित्रित हुआ है। वे स्वीकार करते हैं कि संसार दुःखमय है और जीवन क्षणभंगुर है, तथापि वे सभी के लिए आनंदमय जीवन की संभावना को तलाशते है। उनके अनुसार दुःख विवेक और तर्क का परिणाम है जबकि आनंद सहृदयता का । 'आँसू' में वे जीवन की क्षणभंगुरता और पीड़ा का गहन चित्रण करते हैं लेकिन कामायनी तक आते-आते वे इस पीड़ा को आनंद की सीढ़ी बना देते हैं।

उनका मानना है कि दुःख स्थायी नहीं होता वह अंधेरी रात के बाद आने वाले प्रकाश की तरह क्षणिक होता है। यह आशावादी दृष्टिकोण ही प्रसाद को छायावाद के अन्य कवियों से अलग और अधिक दार्शनिक रूप से सुदृढ़ बनाता है। वे दुःख को शिव के कल्याणकारी रूप का ही एक हिस्सा मानते थे जो मनुष्य के परिष्कार के लिए आवश्यक है।

निष्कर्षतः, जयशंकर प्रसाद का साहित्य भारतीय मनीषा और आधुनिक चेतना का एक विराट और मंगलकारी संगम है। उन्होंने दर्शन की कठोरता को सौंदर्य की तरलता से और इतिहास के सत्य को कल्पना की कोमलता से मिलाकर एक कालजयी सृजन किया है। उनके कृतित्व में जो जीवन दृष्टि मिलती है वह हमें पलायनवाद से नहीं बल्कि जीवन की समस्याओं से साहस के साथ जूझते हुए 'अखंड आनंद' प्राप्त करने की प्रेरणा देती है। प्रसाद ने हिंदी साहित्य को एक ऐसी भाषा और ऐसी चेतना प्रदान की जिसने उसे विश्व-साहित्य के समकक्ष प्रतिष्ठित कर दिया। सौंदर्य उनके लिए केवल बाहरी चमक नहीं आत्मा की सुगंध है, सत्य उनके लिए मानवीय मूल्यों की निरंतर खोज है और दर्शन वह मार्ग है जो मनुष्य को उसके देवत्व की ओर ले जाता है। उनका साहित्य आज भी हमें "शक्ति के विद्युत कणों" को जोड़कर एक विजयी मानवता बनाने का संदेश देता है जो आधुनिक विश्व के द्वंद्वों को मिटाकर समरसता की स्थापना कर सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नंद दुलारे वाजपेयी- आधुनिक साहित्य पृष्ठ 71
2. गंगा प्रसाद पांडेय- महादेवी वर्मा कामायनी एक परिचय भूमिका पृष्ठ 08
3. हरीश अग्रवाल- जयशंकर प्रसाद एक विशेष अध्ययन
4. रेनू सिंह- महाकाव्य के रूप में प्रसाद की कामायनी का वैशिष्ट्य पृष्ठ 03
5. प्रोफेसर नरेंद्र कोहली-उपन्यासकार प्रसाद के साहित्य सिद्धांत पृष्ठ 05
6. जयशंकर प्रसाद- आधुनिक हिंदी कवियों के काव्य सिद्धांत पृष्ठ 355
7. विनोद शंकर व्यास- प्रसाद और उनका साहित्य पृष्ठ 22